2 अक्टूबर 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30से 7.00बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 6 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2016 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त अनेक समाचार विगत अंक में छप चुके हैं; शेष कुछ समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री परमागम मंदिर में ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा दोनों समय प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित केशरीमलजी पाटनी, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित रत्नेशजी शास्त्री, पण्डित संभवजी शास्त्री आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

अजमेर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री सीमंधर जिनालय एवं श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम में पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन द्वारा प्रात: समयसार के संवर अधिकार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी एवं पण्डित यशजी शास्त्री कोटा द्वारा दोनों स्थानों पर पूजन-विधान का आयोजन किया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम ब्र. समता दीदी झांझरी द्वारा कराये गये। ब्र. समता दीदी द्वारा दोपहर को नाटक समयसार का वांचन व अर्थ स्पष्ट किया गया तथा रात्रि में तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अधिकार का व शंका-समाधान कर प्रश्नों का खुलासा किया गया।

दिल्ली (शिवाजी पार्क) : यहाँ पर्व के अवसर पर शाहदरा में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया व श्री अविनाशजी टडैया द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक, नयचक्र, निमित्त-उपादान, निश्चय-व्यवहार, हेय-उपादेय, दशलक्षण धर्म आदि विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा तीरगरान स्थित श्री शांतिनाथ दिग. जैन पंचायती मंदिर में दोनों समय विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त विभिन्न वर्कशॉप के माध्यम से तत्त्वज्ञान के प्रति रुचि जागृत की गई। प्रात:काल पवैयाजी द्वारा रचित दशलक्षण विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

कानपुर (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित रमेशजी शास्त्री, जयपुर द्वारा प्रात: समयसार के बंधाधिकार पर एवं रात्रि में अनुभवप्रकाश पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में स्थानीय विदुषी समता जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाये गये।

घाटकोपर-मुम्बई : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, बांसवाड़ा द्वारा प्रात: समयसार पर प्रवचन एवं सायंकाल तीन लोक विषय पर प्रोजेक्टर के माध्यम से कक्षा का लाभ मिला। तदुपरान्त दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान के समस्त कार्य श्री अनिल जैन ने कराये तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन पण्डित भावेशजी शास्त्री व दिव्या जैन द्वारा हुआ। **- अशोक जैन, घाटकोपर**

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा प्रात: नियमसार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सिंगोली (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अंकितजी शास्त्री, खनियांधाना द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर, दोपहर में दशलक्षण धर्म पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

नवसारी (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री कुन्थुनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में विदुषी स्वाति शास्त्री द्वारा प्रतिदिन सायंकाल दशलक्षण धर्म पर सामूहिक चर्चा एवं शंका-समाधान हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ कोहेफिजा में पर्व के अवसर पर पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक, रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री सीमंधर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित पारसजी शास्त्री द्वार प्रात: समयसार, दोपहर में द्रव्यसंग्रह और रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

ध्यान रहे, कन्यापक्ष को दहेज देने के लिए किसी न किसी तरह बाध्य करना जितना बड़ा नैतिक व सामाजिक अपराध है, बेमेल संबंधों के लिए कन्या का क्रय करना भी उतना ही बड़ा अपराध है; क्योंकि कन्या के क्रय की प्रथा ने ही तो अनमेल रिश्तों को प्रोत्साहित किया था, परम्परा डाली थी। साठ–साठ वर्ष के वृद्ध श्रीमन्त भी निर्धन व्यक्तियों को मुँहमाँगा धन का प्रलोभन देकर पन्द्रह–सोलह वर्ष की कन्याओं से शादी कर लिया करते थे और स्वयं दस–पाँच वर्ष में ही राम को प्यारे होकर पच्चीस–तीस वर्ष की भरी जवानी में ही उसे वैधव्य के दु:हस दु:ख भोगने को छोड़ जाते थे। बेचारी वे विधवायें जीवनभर हिरणी की भाँति दीन–हीन बनी कामियों की कुदृष्टि से अपने को बचाती–सकुचाती कुटुम्बियों से उपेक्षित रहकर जैसे–तैसे अपनी जिन्दगी के दिन पूरे करती थीं।

सौभाग्य से आज वह प्रथा तो नहीं है, पर उसके बदले वर–विक्रय का श्रीगणेश हो गया है। दोनों ही परिस्थितियों में कन्यायें ही अत्याचार की शिकार बनती रही हैं। विवेकशून्य समाज की कन्याओं की दुर्गति तो होनी ही थी, सो उन्हें कुएं से निकाला तो बेचारी खाई में जा गिरी।''

दुनिया में सब तरह के लोग होते हैं, जिन्हें धन की ही सर्वाधिक महिमा है, ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है। ऐसे लोग धन के सिवाय अन्य गुण–दोष देखते ही नहीं हैं। जिस तरह मीठे पर मक्खियाँ और माँस पर गिद्ध मँडराने लगते हैं, उसी तरह सेठ सिद्धोमल के पास भी अनेक सुन्दर से सुन्दर कन्याओं के प्रस्ताव आने लगे।

जब तक धन का लालच और बड़े लोगों से चिपकने की आदत नहीं जायेगी, तब तक न वर–विक्रय रुकेगा और न कन्या–क्रय पर ही रोक लग पायेगी। कन्या–क्रय और वर–विक्रय ये दोनों ही बेमेल संबंधों को प्रोत्साहित करते हैं।

संयोग से संजू के लिए अनेक रिश्तों में एक ऐसी लड़की का रिश्ता भी आया, जिसके पिता संजू की वास्तविक योग्यता और उसकी वर्तमान परिस्थिति से परिचित थे एवं उसको वर्तमान स्थिति में पहुँचाने में केवल उसके पिता को ही उत्तरदायी मानते थे। वह कन्या भी संजू के व्यक्तित्व से सुपरिचित और प्रभावित थी। इधर संजू के लिए भी यह रिश्ता अपरिचित नहीं था। वह भी इस रिश्ते से प्रसन्न था। पर दोनों पक्षों में इतना वैचारिक मतभेद अवश्य था कि संजू के पिता अपनी घोषणानुसार केवल एक रुपया और नारियल के सिवाय कुछ नहीं लेना चाहते थे और कन्यापक्ष का यह आग्रह था कि वह अपनी हैसियत और परम्परानुसार स्वेच्छा से जो भी उपहार अपनी बेटी और होने वाले जमाई को देगा, वह वरपक्ष को स्वीकार करना ही होगा। तथा हमारे घर पर पधारे बरातियों का स्वागत–सम्मान करना और यादगार के रूप में या शादी की स्मृति स्वरूप दी गई छोटी–मोटी भेंट भी बरातियों को स्वीकार करनी ही होगी।

कन्यापक्ष का कहना था कि ''परम्परागत प्रत्येक पुरानी बात बुरी ही होती हो, गलत ही हो, यह बात भी नहीं है और प्रत्येक नवीन बात सही ही हो, भली ही हो – यह भी कोई नियम नहीं है। वस्तुत: अति ही सर्वत्र बुरी होती है। इसीलिए किसी मनीषी ने ठीक ही कहा है कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'।

कन्या के पिता ने आगे कहा –''शादी–विवाह के बहुत से रीति–रिवाज और परम्परायें बहुत अच्छे होते हैं, हमें उन्हें तोड़ना भी नहीं चाहिए। पर अविवेक के कारण आज दोनों पक्षों में हो रही अति से अनेक अच्छे रीति–रिवाज और परम्परायें भी बदनाम हो गई हैं। उनमें सबसे अधिक बदनामी दहेज को मिली है।

वस्तुत: दहेज का परम्परागत रिवाज बुरा नहीं था। बल्कि यह एक अच्छी परम्परा थी। यह कभी किसी बुद्धिमान व्यक्ति की सूझबूझ का सुखद परिणाम रहा होगा। पर आज तो इसका स्वरूप ही बदल गया है, विकृत हो गया है। यह पहले जितनी सुखद थी, आज उससे कहीं बहुत अधिक दु:खद बन गई है। उस दु:खद स्थिति के मूल कारणों को न देखकर कुछ लोग दहेज जैसी पवित्र परम्परा का ही विरोध करने लगे हैं। दहेज को ही कोसने लगे हैं। ऐसे लोग दहेज का सही स्वरूप, अर्थ व उसका मूल प्रयोजन नहीं जानते। दहेज वस्तुत: कन्या के माता–पिता, भाई–भाभी, बंधु–बान्धव, कुटुम्ब–परिवार और रिश्तेदारों द्वारा अपनी–अपनी शक्ति और रुचि के अनुसार प्रेमपूर्वक सहर्ष दिया

गया वह उपहार है, जिसे प्रदान कर वे प्रसन्न होते हैं कृतार्थ होते हैं। इसमें परस्पर प्रेम और सहयोग की भावना भी निहित होती है।

इस परम्परा को प्रचलित करने के पीछे एक पवित्र उद्देश्य यह भी रहा होगा कि जिन लड़के–लड़कियों को परिवार और समाज के लोग वर–वधू के रूप में गृहस्थ जीवन में प्रवेश कराते हैं, उनकी प्रारंभिक या प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायित्व भी तो उनके परिवार व समाज का है। अत: सभी घर–कुटुम्ब के लोग, रिश्तेदार, पंच और समाज के सब लोग मिलकर अनेक नेग–दस्तूरों के रूप में कुछ न कुछ दैनिक आवश्यकता की वस्तुयें देकर एक नया घर बसाते हैं।

आपने देखा होगा दहेज में क्या–क्या दिया जाता है ? रसोई के बर्तन, शयनकक्ष का सामान, बैठक का फर्नीचर, पहनने–ओढने के वस्त्र, सामान्य गहने आदि। व्यवहार व आशीर्वाद के रूप में नगद रुपया भी अनेक लोग देते हैं, जो पारस्परिक व्यवहार के रूप में शादी–विवाह एवं जन्मदिनों के अवसरों पर वापिस भी हो जाता है।

जिस तरह मेहमान को मेजबान अपनी परिस्थिति के अनुसार उत्तम से उत्तम भोजन बनाकर प्रेमपूर्वक मना–मनाकर परोसता है, पर मेहमान की इज्जत और प्रतिष्ठा इस बात में ही है कि वह कभी कुछ अपने मुँह से माँगता नहीं है। इसी में होती है दोनों पक्षों की शोभा। मेहमान सोचता है –

रूखी अरु आधी भली, जो परसे मन लाय।
परसत मन मैला करे, तो मैदा जर जाय।।

ठीक यही स्थिति दहेज के संदर्भ में समझना चाहिए। अत: जो दहेज मांगेगा, मैं उसे तो अपनी कन्या दूँगा ही नहीं, पर जो मेरे द्वारा प्रेमपूर्वक दी गई भेंट को स्वीकार नहीं करेगा, उसे भी मैं अपनी कन्या देना पसन्द नहीं करूँगा; क्योंकि बिलकुल कुछ भी दहेज स्वीकार न करना भी कन्यापक्ष का अपमान है।

हमारी जो लेन–देन की विशुद्ध परम्परायें हैं, उनका निर्वाह तो होना ही चाहिए। वस्तुत: देखा जाए तो दहेज कोई समस्या नहीं, समस्या है दहेज की मांग करना, दहेज का सौदा करना, दहेज देने के लिए कन्यापक्ष को येन–केन–प्रकारेण बाध्य करना।

दहेज देने–लेने का व्यवहार तो सदा से है और रहेगा। वह कोई अनुचित भी नहीं है। विरोध दहेज का नहीं, दहेज प्रथा का होना चाहिए। दहेज देने एवं लेने को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाना ठीक नहीं है।

कुछ लोग अधिक दहेज मिलने में अपनी इज्जत समझते हैं तो कुछ बिलकुल भी दहेज न लेने में, स्वीकार न करने में अपनी इज्जत समझते हैं, पर वे दोनों ही प्रकार के लोग भूल में हैं, वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ हैं।''

कन्या के पिता के ये आदर्श विचार सुनकर सेठ सिद्धोमल भी उनके विचारों से सहमत हो गये। दहेज के कारण और निवारण पर अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हुए कन्या के पिता ने कहा –''आज शायद ही कोई लेखक, कवि, कहानीकार और वक्ता बचा हो, जिसने दहेज के विरोध में कभी न कभी अपनी कलम या जबान न चलाई हो; पर उनमें ऐसे बहुत कम होंगे जो उसकी तह तक पहुँचे हों। अधिकांश तो केवल वरपक्ष को कोसने में ही अपने कर्तव्य की इति–श्री मान लेते हैं।

पर क्या ऐसा वर्गीकरण संभव है कि अमुक–अमुक व्यक्ति वरपक्ष के हैं और अमुक कन्यापक्ष के ? क्या वे सभी व्यक्ति, जिन्हें आप आज वरपक्ष का कह रहे हैं, कभी भी कन्यापक्ष के नहीं रहे होंगे या आगे कभी कन्यापक्ष के नहीं रहेंगे। अरे , जिनके घर में एक लड़का एवं एक लड़की है, दोनों शादी लायक हैं। आप ही बताओ ! उन्हें हम किस पक्ष का मानें ? क्या वह एक ही व्यक्ति दोनों पक्ष वाला नहीं है ? और यह एक–दो घर नहीं, घर–घर की कहानी है।

ऐसी स्थिति में यह वर्गीकरण कैसे संभव है ? इसतरह वरपक्ष को गालियाँ देकर क्या हम स्वयं को ही नहीं कोस रहे हैं ? पर हम ऐसा नहीं मान पाते। वरपक्ष का बनते ही पता नहीं हममें वह अकड़ कहाँ से आ जाती है ? वे क्षारतत्त्व कहाँ से पैदा हो जाते हैं कि हम किसी को कुछ समझते ही नहीं हैं ? उस समय हम भूल जाते हैं कि यदि इनके स्थान पर हम और हमारे स्थान पर ये होते तो हमसे यह सब संभव हो पाता, जिन असंभव बातों की हम इनसे अपेक्षा रख रहे हैं ?

जो बातें आपको आज कन्यापक्ष का होने से बुरी लगती हैं, वही बातें कल वरपक्ष का बनते ही अच्छी क्यों लगने लगती हैं? क्या इस दिशा में कभी सोचा है ?

यदि नहीं, तो यह भी एक विचारणीय बात है – इतना विवेक जागृत होते ही दहेज कोई समस्या नहीं रह जायेगी।

फिर हमें वह सिद्धांत याद आ ही जाना चाहिए कि ''आत्मन: प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्', जो दूसरों की बात या व्यवहार हमें अच्छा न लगे, वैसी बात या व्यवहार हम दूसरों से न करें।''

इसप्रकार संजू के होने वाले श्वसुर साहब के विचारों से प्रसन्न होकर सेठ सिद्धोमल उनकी बात से सहमत हो गये और दोनों की राजी से संजू का विवाह एक आदर्श विवाह के रूप में अत्यंत सादगी के साथ दिन में संपन्न हुआ। सहभोज में कोई भी अभक्ष्य वस्तु नहीं बनाई गई।

कन्या के पिता ने अपने बेटी–जमाई को दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं में जो कुछ दिया सो तो दिया ही, एक गोदरेज की अलमारी भरकर चारों अनुयोगों के शास्त्र भी उपहार में दिए तथा बारातियों को भी इक्यावन रुपये की पुस्तकों का एक सेट भेंट में दिया।

एक आदर्श विवाह से वरपक्ष व कन्यापक्ष के सभी लोग तो प्रसन्न थे ही, समाज के गणमान्य व्यक्ति भी प्रसन्न थे। सभी इस विवाह की प्रशंसा कर रहे थे और कह रहे थे कि हम सबको भी इसीतरह के आदर्श विवाहों को प्रोत्साहित करना चाहिये।

अभी हो रहे आदर्श विवाह जो निर्धनता के प्रतीक बनते जा रहे हैं, उनमें भी इसीतरह का सुधार अपेक्षित है, अन्यथा वह योजना लम्बे काल तक नहीं चल सकेगी।

''प्रशंसा और पुरस्कार एक ऐसी संजीवनी है, जो अनजाने ही अन्तरात्मा में नवीन चेतना का संचार कर देती है। यह एक ऐसा टॉनिक है, जिसके बिना व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास ही अवरुद्ध हो जाता है। वस्तुत: यह मानवमात्र की वह मानसिक खुराक है, जिसके बिना मानव में काम करने का उत्साह उत्पन्न ही नहीं होता। जिस तरह मनुष्य का शरीर संतुलित भोजन के अभाव में रोगी हो जाता है, कमजोर हो जाता है; उसी तरह संतुलित प्रोत्साहन व प्रशंसा की कमी के कारण मानव की कार्यक्षमता कम हो जाती है।

प्रशंसा व प्रोत्साहन एक ऐसी रामबाण अचूक औषधि है, जो हताश, हतोत्साहित व निरुत्साहित मानवों के मनों में आशा, उमंग व उत्साह भर देती है। प्रशंसा की खुराक देकर आप एक भूखे–प्यासे व्यक्ति से भी मनचाहा कठिन से कठिन और हीन से हीन काम करा सकते हैं।

आये दिन होने वाले स्वागत समारोह, अभिनन्दन–पत्रों और प्रशंसा–पत्रों का समर्पण एवं उपाधियों व पुरस्कारों का वितरण तथा आभार प्रदर्शनों के आयोजन निरर्थक नहीं है, इन सबके पीछे यही मनोवैज्ञानिक तथ्य काम करता है।''

इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को ध्यान में रखकर ही आचार्यश्री ने उस दिन अपने प्रवचन में विज्ञान के स्वाध्याय की प्रशंसा की थी, जिसे सुनकर वह मन ही मन भारी प्रसन्न था। अब उसका उत्साह द्विगुणित हो गया था। फलस्वरूप उसने अपने स्वाध्याय को तो नियमित और व्यवस्थित किया ही, साथ ही तत्त्वप्रचार की नई–नई योजनाएं बनाने में भी वह सक्रिय हो गया।

आचार्यश्री द्वारा प्रशंसारूपी जल के सींचने से उसकी मानस वाटिका पल्लवित पुष्पित हो हरी–भरी होने लगी थी।

दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए तो प्रशंसा पाने और यश खाने की आदत एक बड़ी भारी मानवीय दुर्बलता भी है, जिसका चतुर, चालाक व वाक्पटु व्यक्ति दुरुपयोग भी कर लेते हैं। स्वार्थी लोग इस मानवीय कमजोरी को पहिचानकर झूठ–मूठ प्रशंसा करके अपने स्वार्थ सिद्ध करने के प्रयास भी करते हैं।

यह एक ऐसी विश्वव्यापी बीमारी भी है, जो औरों की तो बात ही क्या, क्वचित्–कदाचित् बड़े–बड़े साधु–सन्तों तक में भी देखी जा सकती है और इससे बचना असंभव नहीं तो कठिन तो है ही। अत: यश की भूख और प्रशंसा की प्यास बुझाते समय प्रशंसक के हृदय की पवित्रता की पहिचान और तदनुसार अपनी योग्यता का आंकलन एवं आत्मनिरीक्षण तो कर ही लेना चाहिए।

सज्जन बुद्धिमान व्यक्ति वह है, जो इसका उपयोग व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए एक चतुर वैद्य की तरह इसप्रकार करता है कि किसको/कब/कितनी मात्रा में प्रशंसा की खुराक दी जाए ? जो उसके सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में सहायक हो सके।

इस संबंध में प्राय: होता यह है कि व्यक्ति इसके मूल उद्देश्य को दृष्टि से ओझल करके या तो अपने–पराये के संकुचित दृष्टिकोण के कारण 'अन्धा बाँटे रेवड़ी, चीन–चीन कर देय' वाली कहावत चरितार्थ करने लगता है। अथवा स्वयं कुछ सोचे–समझे बिना, देखादेखी भेड़चाल चल देता है। **(क्रमश:)**

स्वर्ण जयंती के मायने (12)

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का उद्भव व विकास

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आज जब सारा जगत युवा वर्ग की धर्म से विमुखता से चिंतित है, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की छत्रछाया में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उद्भव व विकास किसी चमत्कार से कम नहीं।

युवा फैडरेशन युवाओं का कोई सामान्य संगठन नहीं है। भटके हुये अन्य युवा संगठनों के विपरीत यह समाज के ऐसे आत्मार्थी, स्वाध्यायी, संस्कारी, सदाचारी, गंभीर, रचनात्मक दृष्टिकोण वाले कर्मठ व जिम्मेदार युवाओं का समूह है, जो कि समाज को दिशा देने का गुरुतर कार्य कर रहा है।

हालांकि यह समाज से कुरीतियाँ दूर करने की चर्चाएं नहीं करता है; पर इसके सदस्य कुरीतियों से दूर हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे अपने लिये एक समाज चाहिये। समाज में भी उसे मात्र सामान्य सदस्य बनकर ही नहीं रहना है, वहाँ उसे अपनी विशिष्टता स्थापित करनी है।

अगर हम अपने बालकों को अपने ही समाज के अंदर वह समाज उपलब्ध नहीं करवायेंगे, जहाँ वह अपने आपको स्वतंत्र महसूस कर सके और अपने अस्तित्व को स्थापित कर सके तो वह अपने समाज से बाहर के समाज में जायेगा। बाहर के उस प्रदूषित और व्यसनी समाज में स्थापित होने के लिये वह व्यसनी बनेगा, अपनी विशिष्टता स्थापित करने के लिये बढत हासिल करने के लिये वह अन्यों के साथ व्यसनों में होड़ करेगा। यदि हमारा वही युवक हमारी निर्व्यसनी, सात्विक समाज में रहेगा तो विशिष्ट और आगे दिखने के लिये त्याग–तपस्या में होड़ करेगा, कोई एक उपवास करता है तो वह दो उपवास करेगा, कोई एक घंटे स्वाध्याय करता है तो वह दो घंटे स्वाध्याय करेगा। हमारा युवक अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये बाहर न जाये व बाहर की गंदगी साथ लेकर घर न लौटे, इसके लिये आवश्यकता है कि हम उन्हें अपने समाज के अंदर ही वह प्लेटफार्म उपलब्ध करवायें। युवा फैडरेशन ने यही किया; युवा फैडरेशन ने समाज के युवकों को समाज के अंदर ही रहकर उनकी सभी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ–साथ उनमें आध्यात्मिकता का बीजारोपण और विकास भी किया।

मनुष्य की एक और कमजोरी है। अच्छे से अच्छा कार्य उसे अकेले करते हुए संकोच होता है, लज्जा आती है और समूह में वह घृणित से घृणित कार्य भी खुलेआम करते हुए नहीं हिचकता है।

उदाहरण के लिये यदि हम अपने 20 साल के बच्चे से कहें कि बेटा! घर से नहा–धोकर, धोती–दुपट्टा पहिनकर, नंगेपांव, पैदल, भरे बाजार में चलकर मंदिर जाओ और पूजन करो तो हो न हो वह यह कहते हुए इन्कार कर दे कि नहीं, मुझे शर्म आती है। वही बालक होली के दिन 10–20 लोगों के साथ हो जाने पर अपना मुंह काला करके, गधे की पीठ पर उल्टा बैठकर फटे–पुराने कपड़े पहिने भरे बाजार से निकल जाता है, तब उसे लज्जा नहीं आती।

युवा फैडरेशन ने समाज के युवकों को समाज के अंदर ही संस्कारी युवकों का वह समूह प्रदान किया जो एक दूसरे के लिए आदर्श व प्रेरणा स्रोत बनकर उनके कल्याण में निमित्त बने।

युवाओं का यह संगठन युवकों को सर्वसमाज से पृथक् नहीं करता वरन् समाज का एक महत्वपूर्ण, जिम्मेदार व कार्यकारी अंग बनाता है।

समस्त विवादों से परे, तटस्थ रहकर मात्र आत्मकल्याण व समाज कल्याण हेतु पाठशालाओं का संचालन, स्थानीय स्तर पर नियमित सामूहिक स्वाध्याय का संचालन, नियमित सामूहिक पूजन व भक्ति के कार्यक्रम, स्थानीय शिक्षण शिविरों व ग्रुप शिविरों का आयोजन, तीर्थ यात्राओं का आयोजन, सत्साहित्य का प्रकाशन व वितरण, आध्यात्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं स्थानीय आवश्यक्तानुसार जिनालयों तथा स्वाध्याय भवनों का निर्माण आदि ऐसे कार्य हैं जो युवा फैडरेशन को अन्य सभी संगठनों से पृथक् करते हैं।

युवा फैडरेशन के सदस्य स्वयं शिक्षक बनकर पाठशालाओं में पढाते हैं व प्रवचनादिक भी करते हैं। इसप्रकार हम पाते हैं कि अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के बैनर तले दिगम्बर जैन समाज के अंदर एक ऐसे आदर्श समाज की रचना हो गई है, जो किसी का भी आदर्श हो सकती है।

हम आशा करते हैं कि मोक्षमार्गियों का यह संगठन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन इसी तरह दीर्घकाल तक समाज का पथप्रदर्शन करता रहेगा। ●

देखो, तत्त्वविचार की महिमा !

देखो, तत्त्वविचार की महिमा ! तत्त्वविचार रहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरण आदि करे, उसको तो सम्यक्त्व होने का अधिकार नहीं और तत्त्वविचार वाला इसके बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी होता है।

– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 260

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दृष्टि का विषय

31 आठवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में काल को पर्याय कहते हैं।

द्रव्य-गुण-पर्याय में **पर्याय को** काल कहा जाता है, **भाव को** गुण कहा जाता है और **द्रव्य स्वयं वस्तु** है; इसप्रकार द्रव्य-गुण-पर्याय में प्रदेशों को शामिल नहीं किया है।

जिसप्रकार गुणों में स्वभावभेद है, वैसा स्वभावभेद प्रदेशों में नहीं है। ज्ञान, दर्शन गुणों की भांति प्रदेशों में ऐसा कोई भेद नहीं है कि यह प्रदेश देखने का काम करेगा या यह प्रदेश जानने का काम करेगा।

इस विषय के संबंध में हम पूर्व में विस्तार से चर्चा कर चुके हैं; अतएव उसका विशेष वर्णन अपेक्षित नहीं है। मात्र इतना ही जानना पर्याप्त है कि **द्रव्य-गुण-पर्याय में प्रदेशों को गौण कर दिया। लेकिन वस्तु में 'असंख्यातप्रदेशी' – यह भी एक पक्ष है, यदि इस पक्ष को गौण कर दिया तो पूरी वस्तु पकड़ में नहीं आएगी।**

इसप्रकार नित्यता वाला काल का खण्ड दृष्टि के विषयभूत द्रव्य में शामिल है और उस नित्यता में 'कभी नहीं पलटना' ही नहीं; अपितु 'निरन्तर पलटना' भी शामिल है।

यदि हम निरन्तर पलटने को अनित्यता कहकर द्रव्य में से निकालते हैं तो मात्र पर्याय ही नहीं निकलेगीय; अपितु अनित्यत्व नाम का धर्म भी निकल जाएगा और यदि भगवान आत्मा में से एक धर्म या गुण भी बाहर निकलता है तो वह भगवान आत्मा भाव से खण्डित हो जायेगा।

यदि वस्तु में से अनित्यत्व को निकाला जाता है तो मात्र पर्याय ही नहीं निकलेगी, अपितु अनित्यत्व नाम का धर्म भी निकल जायेगा तो यह काल संबंधी भूल नहीं है, अपितु भावसंबंधी भूल है; क्योंकि अनित्यत्व धर्म, गुण में शामिल है और **गुण भाव को कहते हैं।**

इसी विषय से संबंधित समयसार अनुशीलन का निम्न कथन भी द्रष्टव्य है –

''**प्रश्न –** इसप्रकार काल की अखण्डता को सुरक्षित रखने से द्रव्यार्थिकनय के विषयभूत द्रव्य में अर्थात् दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल नहीं हो जावेगी क्या ? क्योंकि परिणामों के अन्वय का ही तो काल की अखण्डता कहा जा रहा है। जब परिणामों का अन्वय दृष्टि के विषय में आ गया तो परिणाम ही आ गये समझिये।

उत्तर – ऐसी बात नहीं है; क्योंकि आचार्य जयसेन अन्वय को गुण का और व्यतिरेक को पर्याय का लक्षण कहते हैं। उनके मूल शब्द इसप्रकार हैं –

अन्वयिनो गुणा अथवा सहभुवा गुणा इति गुणलक्षणम्। व्यतिरेकिण: पर्याया अथवा क्रमभुव: पर्याया इति पर्यायलक्षणम्।[1]

उक्त कथन से यह स्पष्ट है कि अनुस्यूति से रचित प्रवाह गुण है, पर्याय नहीं। काल का अन्वय (अखण्ड प्रवाह) गुण है और काल का व्यतिरेक पर्यायें हैं। इसप्रकार काल की अखण्डता दृष्टि के विषय में आने पर भी पर्यायें उसमें नहीं आतीं।[2]

अनुस्यूति से रचित प्रवाह दो प्रकार का होता है, एक तो विस्तार क्रम वाला अनुस्यूति से रचित प्रवाह तथा दूसरा प्रवाहक्रम वाला अनुस्यूति से रचित प्रवाह।

आत्मा में जो असंख्य प्रदेश हैं; वे बिखर कर कभी अलग-अलग नहीं होते हैं; क्योंकि उनमें **अनुस्यूचित से रचित एक प्रवाह** है। जिसप्रकार प्रदेशों में अनुस्यूति से रचित प्रवाह है; उसीप्रकार **पर्यायों में भी अनुस्यूति से रचित प्रवाह** है।

पूर्वपर्याय और उत्तरपर्याय – ये दोनों पृथक्-पृथक् होने पर भी इतनी मजबूती से जुड़ी हैं कि इनका जोड़ कोई मोतियों से पिरोए हुए सूत के समान नहीं है। मंदिरों में संगमरमर को ही खोद-खोदकर बनाई गई माला में जो मोती जुड़े होते हैं; वे किसी सीमेंट के मसाले से नहीं जुड़े होते हैं, अपितु वे अन्दर में उसी संगमरमर से जुड़े होते हैं।

जो दो पर्यायें मजबूती से जुड़ी हैं, वे सूत में पिरोई गई माला के समान नहीं हैं; अपितु संगमरमर से बनी मोतियों की माला के समान हैं।

जिसप्रकार दो प्रदेश अलग-अलग होने पर भी मजबूती से जुड़े हुए हैं, उसीप्रकार दो पर्यायें भी अलग-अलग होने पर भी अन्दर से बहुत मजबूती से जुड़ी हुई हैं। जिसप्रकार दो प्रदेशों के बीच में कोई खाली जगह नहीं है, उसीप्रकार दो पर्यायों के बीच में भी कोई खाली जगह नहीं है।

डोरे में पिरोई गई जो मोतियों की माला है, उसमें दो मोतियों के बीच में खाली जगह है; किन्तु जो संगमरमर के मोती बनाए गए हैं, उनमें वे मोती किसी मसाले से नहीं जोड़े गए हैं। वे पर्यायें डोरी में पिरोए गए मोतियों के समान नहीं हैं; अपितु संगमरमर पर बनाई गई मोतियों के माला के समान हैं।

जिसप्रकार द्रव्य में दो प्रदेशों के बीच में क्षेत्र की अखण्डता है; उसीप्रकार दो पर्यायों के बीच में काल की अखण्डता है और उन प्रदेशों और पर्यायों में अनुस्यूति से रचित प्रवाह है। **जो अनुस्यूति से रचित प्रवाह है, वह अन्वय है और वह अन्वय द्रव्य का लक्षण है तथा पर्यायों में जो परस्पर व्यतिरेकीपना है, वह पर्याय का लक्षण है।**

कुछ लोग कहते हैं कि आपने पर्यायों के प्रवाह को शामिल करके दृष्टि के विषय में सभी पर्यायों को शामिल कर लिया।

मैं उनसे कहता हूँ कि अरे भाई ! **पर्यायों के प्रवाह का नाम तो द्रव्य है।**

यदि अनुस्यूति से रचित प्रवाह को पर्याय मानकर द्रव्य से निकालते हैं तो मात्र पर्याय खण्डित नहीं होती है, अपितु द्रव्य खण्डित होता है। अनुस्यूति से रचित प्रवाह तो नित्यता का लक्षण है।

यदि उस नित्यत्व नामक धर्म को निकालेंगे तो भगवान आत्मा भाव से खण्डित हो जाएगा।

यदि द्रव्य में से अनुस्यूति से रचित प्रवाह को निकाला तो अन्वय निकल जायेगा, जबकि निकालना (व्यतिरेक) पर्याय को है।

प्रश्न – क्या व्यतिरेक अन्वय के अंश नहीं हैं, जबकि प्रवचनसार टीका में पर्यायों को 'अन्वय का व्यतिरेक' – ऐसा कहा है ?

उत्तर – जैसे आजकल कई ऐसे जुड़वा बच्चे पैदा होते हैं, जिनके अंग जुड़े होते हैं; यदि उन्हें अलग–अलग किया जावे तो वे दोनों ही मर जायेंगे, जिन्दा नहीं रह पावेंगे। उसीप्रकार द्रव्य में दो पर्यायें ऐसी जुड़ी हैं कि उनके बीच में बिल्कुल खाली जगह नहीं है और वे इसप्रकार से जुड़ी हैं कि वे तीन लोक और तीन काल में कभी भी अलग नहीं हो सकती हैं।

उन पर्यायों का अलग नहीं होना, उसका नाम अनुस्यूति से रचित प्रवाह है, वह अन्वय है तथा अन्वय दृष्टि के विषय में शामिल है।

'अनुस्यूति से रचित प्रवाह अन्वय है, द्रव्य है; पर्याय नहीं – यह बात समझना बहुत कठिन है और इससे भी ज्यादा कठिन इसे शब्दों में बाँधना है।

आज के संदर्भ में मुमुक्षु समाज का जो वातावरण वर्तमान में बन रहा है, उसमें इस विषय को संतुलित शब्दों में व्यक्त करना बहुत ही कठिन काम है।

यह जो गुरुदेवश्री द्वारा समझाया गया असली तत्त्वज्ञान है; उस पर एक बार मंथन होकर पुस्तक के रूप में लिखा जाये – ऐसी मेरी भावना है; लेकिन यह बात मात्र पुस्तकों में लिखी जाने से कायम नहीं रहेगी, यह बात तो दिमाग में लिखी जानी चाहिए; इसलिए मेरे पास जो महाविद्यालय के दो सौ विद्यार्थी हैं, मैं उनके दिमाग में यह लिख रहा हूँ। चूँकि ये विद्यार्थी प्रवक्ता हैं; इसलिए इनके दिमाग में रहने से यह बात अन्य लोगों तक भी पहुँचेगी। प्रवक्ताओं के दिमाग में इस बात को लिखने से इसके अधिक काल तक टिके रहने की संभावना है। ●

रितेश जैन का शिक्षक सम्मान

राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा जिला स्तर पर आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह के अन्तर्गत श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक श्री रितेशजी जैन (प्राध्यापक–रा.नगर उ.मा.विद्यालय, बांसवाड़ा) का शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्यों हेतु प्रशस्ति–पत्र, प्रतीक चिह्न एवं शॉल ओढाकर सम्मान किया गया।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की

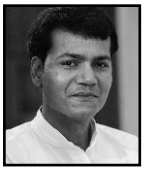

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा 'जैनदर्शने त्रैलोक्य विषयक धारणाया समीक्षात्मकं तुलनात्मकं वाऽध्ययनम्' (जैनदर्शन में तीन लोक) विषय पर शोधकार्य संपन्न किया गया; तदर्थ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नईदिल्ली द्वारा सितम्बर 2016 में उनको विद्यावारिधि (पीएच.डी.) की उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना यह शोध डॉ. श्रीयांसजी सिंघई, जयपुर के निर्देशन में पूर्ण किया।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

समयसार की धूम मच गई

धूम मच गई धूम मच गई, समयसार की धूम मच गई।
बीस-बीस तीर्थंकरों की, निर्वाण स्थली में।।
समयसार की धूम मच गई, सिद्धों का दरबार रच गया।
कुन्दकुन्द आचार्यदेव के, ग्रंथराज की धूम मच गई।।
अमृतचंद्र आचार्य देव की, आत्मख्याति की धूम मच गई।
श्री जयसेन आचार्यदेव की, तात्पर्यवृत्ति की धूम मच गई।।
धूम मच गई, धूम मच गई।।

• • •

दादा ने है धूम मचाई, धूम मचाई, धूम मचाई,
समयसार की धूम मचाई,
जीव-अजीव का भेद कराया, कर्त्ता-कर्म का भेद मिटाया
पुण्य-पाप को एक बताया, आस्रव-बंध को हेय बताया
शुद्धातम को ध्येय बताया, शक्तियों का भंडार दिखाया
दादा ने है धूम मचाई, धूम मचाई, धूम मचाई
समयसार की धूम मचाई।

- बाहुबली भोसगे, धारवाड़ (कर्नाटक)

हम स्वर्ण जयन्ती मनायेंगे...

- गणतंत्र शास्त्री, आगरा

टोडरमल स्मारक में यह उत्सव आया है...
हम स्मारक के गुण गायेंगे।।
परिणति को अब शुद्ध बनावें, मंगल अवसर भाग्य से पावें।
तत्त्वज्ञान की धारा बहावें, शुद्धातम का लक्ष्य बनावें।।
स्वर्ण जयन्ती मनाने का यह अवसर आया है...
हम जयपुर नगरी जायेंगे।। टोडरमल...
विद्वानों की खान कहावे। जिनवाणी का मर्म बतावे।
निर्मल अध्ययन ज्ञान बढावे। समयसारमय निज दिखलावे।
जिनवाणी घर-घर पहुंचाने अब उत्सव आया है...
हम स्मारक के गुण गायेंगे।। टोडरमल...
कहान गुरु ने बीज लगाया। द्वय दादा ने वृक्ष बनाया।
भूले भटके मानव भव के। जीवन को ओजस्वी बनाया।।
विद्वानों की फौज ने यह अवसर पाया है...
हम स्वर्ण जयन्ती मनायेंगे।। टोडरमल...

शोक समाचार

(1) अमायन निवासी सेठ श्री कमलेशकुमारजी जैन का दिनांक 21 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। ज्ञातव्य है कि आप अ.भा. जैन युवा फैडरेशन ग्वालियर के निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री के ससुरजी एवं सदस्य विवेक जैन के पिताजी थे।

(2) अलवर निवासी श्री हजारीलालजी (बडेरवाले) का 106 वर्ष की आयु में पंचपरमेष्ठी भगवान के चिंतनपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये। **- अनंतकुमार नवीन कुमार जैन**

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

जिनमंदिर के पुजारियों हेतु बीमा योजना

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा मुमुक्षु मंडलों द्वारा संचालित जिनमंदिरों के पुजारियों का बीमा करवाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक पुजारी और उसके परिवार के सदस्यों (अधिकतम चार) का 1 लाख रुपये का चिकित्सा बीमा और 1 लाख रुपये का दुर्घटना बीमा किया जायेगा। इस योजना का लाभ लेने हेतु पुजारीगण अपना फार्म कार्यालय से मंगा लेवें। फार्म जमा कराने की अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2016 है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

इटावा (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित शेषकुमारजी छिन्दवाड़ा द्वारा पद्मनंदि-पंचविंशतिका पर तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। **- साधनदास जैन, इटावा**

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com